Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

"वेदाङ्गो में शिक्षा की वेदाङ्गता "

श्वेता सक्सेना
पी0एच0डी0
पूर्व अतिथि प्रवक्ता संस्कृत
साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली
E-Mail:- pradeepsaxena442@gmail.com

सारांश

भारतीय संस्कृति, दर्शन और धर्म के मूल स्रोत वेद हैं, जिनकी रक्षा और सम्यक् अध्ययन हेतु ऋषियों ने छह वेदाङ्गों की रचना की। ये वेदाङ्ग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष—वेदों को समझने तथा वैदिक कर्मकाण्ड के शुद्ध संपादन में सहायक हैं। इनमें शिक्षा वेदाङ्ग को गणना और महत्व—दोनों दृष्टियों से सर्वोच्च स्थान प्राप्त है, क्योंकि यह वेदमन्त्रों के शुद्ध उच्चारण का शास्त्र है। शुद्ध वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम और सन्तान के बिना वेदाध्ययन सफल नहीं होता; अशुद्ध उच्चारण से मन्त्र अर्थहीन या हानिकारक भी हो सकते हैं। शिक्षा को वेदपुरुष की नासिका कहा गया है और इसे प्राचीन ध्वनिशास्त्र का आधार माना जाता है। मुण्डकोपनिषद् में वेदाङ्गों का उल्लेख अपरा विद्या के अंतर्गत हुआ है, जहाँ शिक्षा का प्रथम स्थान उसकी अनिवार्यता को दर्शाता है। इस प्रकार शिक्षा वेदाङ्ग वेदाध्ययन का सिंहद्वार और समस्त वेदाङ्गों का शिरोमणि है।

प्रस्तावना :– भारतीय संस्कृति, दर्शन एवं धर्म के आदि स्त्रोत वेद पुरूषार्थ चतुष्टय की सिद्धि के लिए कल्प वृक्ष हैं। भारतीय आस्तिक परम्परा के अनुसार ये वेद श्रुति शब्द से बोधित होते हैं, जिन्हे सृष्टि के साथ ही उभयविध कल्याणार्थ परमपिता परमात्मा ने मानव को प्रदान किया था। ऋषियों ने इस दैवी धरोहर की रक्षा हेतु छः **वेदाङ्गो** के रूप में विशाल साहित्य का प्रणयन किया। वास्तव में **वेदाङ्ग** वे सहायक ग्रन्थ हैं जिनसें वेदों को समझने और उनके कर्मकाण्ड के सम्पादन में सहायता मिलती है। अङ्.ग शब्द का त्युत्पत्रिलश्य अर्थ भी यह सूचित करता है – ''अङ्.गयन्ते ज्ञायन्ते एभिः इति अङ्.गानि''।

Author:- Shweta Saxena
Email:- pradeepsaxena442@gmail.com
Received:- 04 October, 2025
Accepted:- 20 November, 2025.
Available online:- 30 November, 2025
Published by JSSCES, Bareilly
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Non Commercial 4.0 International License

वैदिक वाङ्.मय ज्ञानराशि की अनन्त निधि हैं। शास्त्रानुसार प्रत्येक द्विज को छ': अङ. गो सहित वेद का अध्ययन निष्कारण ही करना चाहिए।

''ब्राह्मणेन निष्कारणों धर्मो षड.ङ.गो वेदोऽध्ययो ज्ञेयश्च।।''

इन छः वेदाङ्.गों में शिक्षा नामक वेदाङ्ग केवल गणना के क्रम से ही नही अपितु

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

महत्त्व एवं वेदसंरक्षण का अप्रतिम साधन होने के कारण वेदाङ्गो में शीर्षस्थानीय हैं। शिक्षा नामक वेदाङ्ग वेदमन्त्रों का साधु उच्चारण सिखलाता है। वेदाध्ययन की सफलता शुद्ध उच्चारण पर निर्भर करती है अन्यथा वे वाग्वज्र बन जाते हैं :–

''मन्त्रोहीनः स्वरतो वर्णतो वा, मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति, यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।।''

मुण्डकोपनिषद् के अनुसार परा और अपरा दो विद्याएँ हैं। इसमें वेद वेदाङ्ग की गणना अपरा विद्या में होती है वेदाङ्गों का क्रम ओर नाम –

''छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौकल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरूक्त श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।''

वेदाङ्गो को वेद–पुरूष के भिन्न–भिन्न अङ्गो के रूप में परिकल्पित किया गया है – अर्थात् –''वेदपुरूष के चरण छन्दशास्त्र, हस्त कल्पशास्त्र हैं, नेत्र ज्योतिष् शास्त्र हैं, कर्णेन्द्रिय निरूक्तशास्त्र हैं, वेद की नासिका शिक्षा शास्त्र हैं एवं मुख व्याकरण शास्त्र हैं। अतएव वेदाङ्गों सहित चारो वेदों का अध्ययन करके ही अनुशीलन कर्ता ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठित होता है। शिक्षा को वेदपुरूष की नासिका कहा गया है।

शिक्षा – शिक्षा वेदाङ्ग वेद मन्त्रों का साधु उच्चारण सिखाता है। शिक्षा ग्रन्थों की गणना चौदह विद्यास्थलों में होती है। तैतिरीयोपरिषद की शिक्षावल्ली के **''शीक्षां व्याख्यास्यामः वर्णः स्वरः मात्रा बलम् साम सन्तानः इत्युक्तः शीक्षाध्यायः''** इस श्रुति वाक्य का अवलम्ब लेकर शिक्षा साहित्य की रचना की गयी। **'शिक्षविद्योपादाने'** इस धातु से शिक्षा शब्द बना है। **''शिक्ष्यन्ते वेदनीयत्वेनोपदिश्यते स्वरादयो यत्र''** यह शिक्षा शब्द की व्युत्पत्ति है। इसमें छः पदार्थों का निरूपण होता हैं – अकारादि वर्ण, उदान्त, अनुदात्त, स्वरितादि स्वर, ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत रूप मात्राएँ, वर्णों के उच्चारणस्थान एवं प्रयत्न रूप बल, सुस्पष्ट एवं सुन्दर उच्चारण रूप साम, सन्धि रूप सन्तान। शिक्षा साहित्य आधुनिक ध्वनि विज्ञान की आधारशिला है। इसे इसलिए कुछ समीक्षकों ने प्राचीन ध्वनिशास्त्र की संज्ञा दी है।

कल्प – वेदाङ.ग साहित्य में कल्प वेदाङ्ग का भी महत्वपूर्ण स्थान हैं। कल्प की आवश्यकता का अनुभव तब हुआ, जब शतपथ आदि ब्राह्मणग्रन्थों में यज्ञ–यागादि के कर्मकाण्डीय व्यवस्था में विस्तार होने से उसके क्रियाकलापों में कठिनता की अनुभूति होने लगी। उसकी पूर्ति के लिए कल्प सूत्रों की रचना हुई। कल्प को वेदपुरूष का हस्त कहा जाता है। जिस प्रकार प्राणी हाथ से कर्म करता है वैसे ही कल्पशास्त्र रूपी हस्त कर्मकाण्ड रूपी कार्यों को करता है। कल्प को विधिशास्त्र भी कहा जाता है। कल्प के द्वारा यज्ञ आदि कर्मों में प्रयुक्त मन्त्रों का विनियोग तथा अन्य धार्मिक विधि–विधानों का सम्पादन किया जाता है। कल्प का व्युत्पत्रलश्य अर्थ है – **''कल्प्यते समर्थ्यते यागप्रयोगोऽत्र इति**

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

कल्पः।।'' कल्पसूत्रों को चार भागों में विभक्त किया गया है–

श्रौत सूत्र	–	यज्ञविधि
गह्रयसूत्र	–	गृहयसंस्कार
धर्मसूत्र	–	सामाजिक धर्म
शुल्बसूत्र	–	यज्ञवेदी – गणनाशास्त्र

व्याकरण – व्याकरण वह शास्त्र है जिनमें किसी भाषा के शब्दों के प्रकारों और शुद्ध प्रयोग के नियमों आदि का उल्लेख प्राप्त होता है। व्याकरण शब्द की अनेक व्युत्पत्ति प्राप्त होती है यथा –

''व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यत्रे अर्थवत्तया प्रतिपाद्यन्ने शब्दा येन वि+आ+कृ+करणे ल्युट! वेदाड्.गे शबसदसाधुताबोधके।''

व्याकरण को वेद पुरूष का प्रधान अड्.ग मुख माना गया है। एक प्रसिद्ध मन्त्र में शबदशास्त्र (व्याकरण) का वृषभ से रूपक बाँधा गया है। उसमें व्याकरण ही कामनाओं की पूर्ति करने के कारण वृषभ नाम से उल्लिखित जान पड़ता है यथा''

चत्वारि श्रृड.गाः त्रयोअस्य पादा द्वे, शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।

त्रिधा वृद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो, मर्त्यां आविवेश।।''

अर्थात् इस व्याकरणरूपी वृषभ के चार सींग हैं – नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात। वर्तमान, भूत और भविष्य – ये तीन काल उसके तीन पाद हैं। सुप् और तिड्. उसके दो शिर हैं। प्रथमादि सप्त विभक्तियाँ इसके सात हाथ हैं। यह उर, कण्ठ और शिर इन तीन स्थानों से बाँधा गया है। यह महान् देव हैं जो मनुष्यों में प्रविष्ट है। व्याकरण प्रकृति और प्रत्यय का उपदेश देकर पद के स्वरूप तथा उसके अर्थ का निर्णय करता है। व्याकरण को भाषाशास्त्र भी कहा जाता है।

निरूक्त – निरूक्त को शब्द–व्युत्पत्तिशास्त्र भी कहते हैं। वेदभाष्यकार सायणाचार्य के अनुसार – ''अर्थ ज्ञान के लिए स्वतन्त्र रूप से जहां पदों का समूह कहा गया है, वह निरूक्त वेदाड्.ग है –

''अर्थावबोधे निरपेक्षतया पदजातं यत्रोक्तं, तन्निरूक्तम्''।।

निरूक्त को वेदपुरूष का श्रोत्र माना गया है– ''निरूक्तं श्रोत्रमुच्यते।'' निरूक्त को से ''निर्वचनशास्त्र भी कहा जाता है। यास्क के द्वारा प्रणीत निरूक्त वेदों के दुर्बोध शब्दों का अर्थ निर्णय करता है।

छन्द – छन्द वेदाड्.ग को छन्दशास्त्र भी कहते हैं। वैदिक मन्त्रों के सम्यक् उच्चारण के लिए छन्द–ज्ञान का होना अत्यावश्यक है। छन्द वेदाड्.ाग को वेदपुरूष के चरण माना गया है – **''छन्दः पादौ तु वेदस्य''।** छन्दों से वेदों को गति मिलती है, क्योंकि वेद के पाद छन्दः शास्त्र हैं, जैसे प्राणी पैर से चलते हैं, वैसे ही समग्र वेद गायत्री आदि छन्दों से ही चलते हैं। छन्द शब्द की निरूक्ति महर्षि यास्क ने इस प्रकार की है – छन्दः की व्युत्पत्ति छद् धातु (ढकना) से बताई है। यास्क के अनुसार ये छन्द शब्द

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

आच्छादनार्थक माना गया है **'छन्दांसि छादनात्'।** छन्द वेदो के आवरण हैं। छन्द से तात्त्पर्य जो हृदय को आह्लाद प्रदान करें ;ऐसे यौगिकार्थ को ही छन्द कह सकते हैं।

वैदिक छन्दों का आधार अक्षर–गणना है। वास्तव में लघु गुरू स्वर या मात्रा की नियमित वर्ण–योजन का ही नामकरण छन्दः रूप में निवृत्त हुआ। छन्द वेद के पर्यायवाची नाम से भी जाना जाता है। छन्द से तात्त्पर्य सामान्यतः वर्णों और मात्राओं की गेयव्यवस्था से है। वैदिक छन्द अपौरूषेय माने जाते हैं। प्रत्येक सूक्त के देवता, ऋषि तथा छन्द–विषयक ज्ञान नितान्त अपेक्षित है। कात्यायन के मतानुसार **''जो व्यक्ति छन्द, ऋषि तथा देवता के ज्ञान से रहित होकर वेदों के मन्त्रों का अध्ययन, अध्यापन, यजन करता है, उसका प्रत्येक कर्म निष्फल हो जाता है और वह पाप की दलदल में फंस जाता है।''**

अतएव वेदमन्त्रों के यथावत् उच्चारण के लिए छन्दों का ज्ञान अतिशय आवश्यक है। छन्दों के ज्ञान के अभाव में मन्त्रों का उच्चारण और पाठ समुचित रूप से नही हो पाता।

ज्योतिष् – ज्योतिष वेदाङ्.ग को काल निर्णयशास्त्र भी कहा गया है। वेदाङ्.ग वाङ्.मय में ज्योतिष् की महत्वपूर्ण भूमिका है। शुभ मुहूर्त में यज्ञ–सम्पादन के लिए इस वेदाङ्.ग की परम आवश्यकता हुई। ज्योतिष् – शास्त्र को वेदपुरूष का चक्षु माना गया है – **''ज्योतिषामयनं चक्षुः''** अर्थात् जिस प्रकार चक्षुओं के बिना व्यक्ति अपना कोई भी कार्य सम्पादित ध्नहीं कर पाता है, उसी प्रकार ज्योतिष् रूपी ज्ञान से रहित पुरूष चक्षुओं के होने पर भी वैदिक कार्यों का सम्पादन नहीं कर पाता। उपयुक्त काल–ज्ञान के बिना वेद–विहित यज्ञादि समस्त कार्य सम्पादित नहीं हो सकते। ज्योतिष् शास्त्र समग्र वेदाङ्गों में मूर्धस्थानीय माना जाता है –

''तद्वद् वेदाङ्गशास्त्राणां गणितं मूर्धनि स्थितम्''।

वैदिक यज्ञ–विधान के लिये ज्योतिष् के महत्व को स्वीकार करके सुविख्यात ज्योतिष्–मार्तण्ड भास्कराचार्य जी ने अपने ''सिद्धान्त शिरोमणि'' नामक ग्रन्थ में स्पष्टत+ उद्घोषित किया है कि –

''वेदास्तावद् यज्ञकर्मप्रवृत्ता यज्ञाः
प्रोक्तास्ते तु कालाश्रेयण।
शास्त्रादस्यात् कालबोधोयतः स्याद्
वेदाङ्गत्वं ज्योतिषस्योक्तमस्यात्।।''

अर्थात् ''वेद यज्ञकर्म में प्रवृत्त होते हैं और यज्ञकाल के आश्रित स्वरूपा होते हैं तथा ज्योतिष् शास्त्र से काल–ज्ञान होता है'', अतएव इससे ज्योतिष्शास्त्र का वेदाङ्.गत्व सिद्ध होता है। अतः ''वेदस्य निर्मलं चक्षु र्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम''। यह वाक्य युक्तियुक्त एवं संगत प्रतीत होता है।

शिक्षा की वेदाङ्.गता

वेदाध्ययन की सफलता मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण पर निर्भर है। विद्याओं के गणनाक्रम में शिक्षा वेदाङ्.ग को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है।

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

जिस प्रकार जीवन जीने के लिए श्वास की आवश्यकता, शरीर की चेतना के लिए आत्मा की आवश्यकता है, भोजन में उचित नमक की जो उपयोगिता है, ठीक वैसी ही उपयोगिता वेदाङ्गों में शिक्षा नामक वेदाङ्ग की है। वेद मन्त्रों का शुद्ध तथा समुचितरूप से उच्चारण करना परमावश्य है। उच्चारण का उपदेश करने वाले वेदाङ्ग को शिक्ष वेदाङ्ग कहते है। वेदाङ्ग के रूप में शिक्षशास्त्र की आवश्यकता वेद ले मन्त्रों का शुद्ध रूप्प में ज्ञान प्राप्त करने के लिए तथा शुद्ध वर्णोच्चारण की प्रवृत्ति स्वरूप हुई। शिक्षा शास्त्र समस्त शास्त्रों में महनीय, उपकारक व वेदज्ञान को शुद्धतम रूप में प्रदान करने वाला श्रेष्ठ वेदाङ्ग है। शिक्षा शास्त्र के ज्ञान की सार्थकता शुद्ध वर्णों के तथा स्वरों के शुद्धतम रूप को निर्धारित करने में होती है।

वेदार्थ के सम्यक् तथा यथार्थ बोध का ज्ञानी बनने के लिए शिक्षा वेदाङ्ग की छत्र–छाया में रहते हुए, उसके द्वारा वर्ण–स्वर का शुद्ध ज्ञान ग्रहण करते हुए ही कोई व्यक्ति वेद मन्त्रों का सफल उच्चारण करने योग्य बन पाता है। शिक्षाशास्त्र का परम ज्ञान समस्त वेदाध्येताओं के लिए नितान्त आवश्यक है। शिक्षा वेदाङ्ग से ही स्वर दोष, वर्ण दोष आदि का नाश सम्भव होता है। तभी तो शिक्षाशास्त्र के सामने स्वर तथा वर्णदोष समूलता से नष्ट हो जाते हैं। शिक्षा शास्त्र के ज्ञान के बिना मन्त्रों का स्वर युक्त हस्त संचालनादि सहित सम्यग् विधि से उच्चारण संभव नही है।

शिक्षा की वेदाङ्गता इतनी समृद्धशाली है कि समस्त वेदों की अपनी–अपनी शिक्षा, शिक्षा–ग्रन्थों के रूप में अपने प्रतिनिधित्त्व का निर्वाह कर रही है तथा शिक्षा की वेदाङ्गता को अन्य वेदाङ्गों के शीर्ष स्थान पर सुशोभित कर रही है। शिक्षा के अनुसार वेदों की सत्ता शुद्ध स्वरों तथा वर्णों के द्वारा मन्त्रोच्चारण की है, जिसमें शिक्षा वेदाङ्ग की भूमिका प्रबल तथा सशक्त है। शिक्षा भाषा का प्रवेश द्वारा है। मुण्डकोपनिषद् में वेदाङ्ग सूची में शिक्षा के प्रथम उल्लेख से ही शिक्षा की वेदाङ्गता की समृद्धशाली भूमिका ज्ञात होती है।

चारों वेदों रूपी विशालतम दुर्ग में प्रवेश का सिंहद्वार एकमात्र शिक्षा वेदाङ्ग ही है। यह अपने शुद्ध वर्ण तथा स्वर उच्चारण का आलम्बन देकर प्राणी को वेद रूपी दुर्ग में प्रविष्ट कराती है। यह शिक्षा वेदाङ्ग अपने आप में समृद्धशाली, सम्पूर्ण तथा महनीय वेदाङ्ग के रूप में वेद सत्ता का प्रतिनिधित्व करता है।

शिक्षा शब्द की व्युत्पत्ति – **''शिक्षयति या सा शिक्षा''**, **''शक्तुं शक्तो भवितुमिच्छा शिक्षा।''** शिक्षा का अर्थ वैदिक मन्त्रो का शुद्ध उच्चारण सिखाने वाले शास्त्र से है। शिक्षा साहित्य आधुनिक ध्वनि–विज्ञान का आधार है। अतएव कुछ समीक्षकों ने इसे प्राचीन ध्वनिशास्त्र की संज्ञा से अभिहित किया है।

वैदिक मन्त्रो की उच्चारण–विधि के निर्देशक ग्रन्थ ''शिक्षा'' नाम से प्रसिद्ध है। अतएव शिक्षा की उपादेयता अत्याधिक प्राचीन

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

है। शिक्षा में अक्षरों का जो लक्षण और जैसा उच्चारण वर्णित है, उसी प्रकार के अक्षरों के शुद्ध उच्चारण से वेदमन्त्रो के पाठ किए जाने का उल्लेख पुराणों, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों में प्राप्त होता है।

शिक्षा वेदाङ्ग गणनाक्रम एवं महत्व दोनों ही दृष्टियों में प्रथम स्थानीय है। इस शिक्षा वेदाङ्ग के मार्ग पर चलकर ही अध्येता शुद्ध रूप में वेदाध्ययन कर सकता है। शिक्षा की वेदाङ्गता अत्यधिक महत्वशाली तथा समृद्धिशाली मानी गई है। वेदाध्ययन में शुद्ध उच्चारण में अत्यधिक बल दिया गया है। व्याकरण महाभाष्य से ज्ञात होता है कि – **"उदात्तस्य स्थाने अनुदात्त ब्रूते खण्डिकोपाध्यायः तस्मै शिष्याय चपेटिकां ददाति।"** अर्थात् गुरू उदात्र के स्थान पर अनुदात्र स्वर का उच्चारण करने वाले शिष्य के मुख पर चपेटा मारकर उसके उच्चारण में संशोधन कर देता था।

अतएव प्राचीन वैदिक कालीन गुरू वेद–मन्त्रों के ठीक–ठीक उच्चारण के विषय में विशेष सतर्क रहते थे। अतएव उच्चारण प्रकार का उपदेशक यह अङ्ग वेदाङ्गों में सर्वोत्तम तथा सर्वप्रथम पूजनीय माना जाता है। उपर्युक्त विवरण से यह ज्ञात होता है कि शिक्षा वेदाङ्ग समस्त वेदाङ्गों में सिरमौर तथा शीर्ष–स्थानीय है।

सन्दर्भः-

1. खेमका, राधेश्याम, कल्याण-वेद-कथाङ.क; गीता प्रेस, गोरखपुर, 2062
2. उपाध्याय, आचार्य बलदेव, चतुर्वेद भाष्य भूमिका संग्रह; चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी
3. कुमार, डॉ० कृष्ण, चतुर्वेद सूक्त सुधाकर; साहित्य भण्डार, मेरठ
4. शर्मा, सत्यकाम, दयानन्द वेद भाष्य; प्राच्य विद्या संस्थान, अजमेर
5. निरुक्त, पं० राजाराम; विद्या भारती, लाहौर
6. जिज्ञासु, पं० ब्रहमदत्त, पाणिनीय अष्टाध्यायी सूत्रपाठ; रामलाल कपूर ट्रस्ट प्रेस, बहालगढ़ (सोनीपत, हरियाणा)
7. पाठक, डॉ० मधुकर; पाणिनीय शिक्षा; चौखम्बा, वाराणसी, 1972
8. विद्या, विजयपाल - वारिधि, वेदवाणी; वेदवाणी कार्यालय रेवाड़ी सोनीपत हरियाणा
9. अग्रवाल, डॉ० वासुदेव शरण, वेद विद्या; सरस्वती विहार, वाराणसी, 1998
10. व्यास, नवल किशोर, शिक्षा संग्रह; चौखम्बा, वाराणसी, 1989
11. आचार्य, डॉ० सुदर्शन देव शिक्षा वेदाङ्गः परम्परा एवं सिद्धांत; संजय प्रकाशन, दिल्ली, 1924
12. शर्मा, कुन्दनलाल, वेदाङ्ग-वैदिक वाङ्मय का वृहद् इतिहास; विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर पंजाब, 1983